गपशप

अब सब खुश हैं

अर्सा हो गया। अख़बारों की सुर्ख़ियों में नहीं हैं। न ही किसी चैनल पर। कहा था कि पार्टी से टिकट नहीं मिलने पर 'स्वतंत्र' लड़ेंगे। जवाब में लैला ने भी कहा था कि वे भी लड़ेंगी। पर लैला-मजनूं में से कोई चुनाव मैदान में नहीं उतरा। अब मजनूं भी लैला को छोड़ कर भूतपूर्व हो गये हैं और लैला भी किसी और मालदार 'शिकार' की तलाश में है। वैसे उसके लिए मजनूं की भूमिका निभाने वाले हुड्डा सरकार में मौजूद हैं। पर प्रेम कहानी में मजनूं का जो हश्र हुआ, उसे देखते हुए अब कोई सार्वजनिक रूप से भूतपूर्व लैला के प्रति अपने प्रेम का इजहार करना नहीं चाहता। और प्रेम ऐसी चीज है जो लाख कोशिश करो, गुप्त रह नहीं पाती। वैसे ढलती जवानी का प्यार कुछ खास ही होता है। यह बात साबित हो गई। लैला-मजनूं की छीछालेदर चाहे जितनी हुई हो, अख़बारों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया वालों ने खूब मजे लिये। पाठक भी जो हत्या, बलात्कार, महंगाई और आतंकवाद की खबरें पढ़-पढ़ कर बोर हो रहे थे, उन्हें भी मजा आया होगा। ये तो लैला के घर से जब मजनूं गायब हुए और शराब के नशे में मीडिया वालों से बातें कीं, फिर नशे में डगमगाते हुए गिर गये और अपनी टांगें तुड़वा ली तो लैला उनकी खैरियत पूछने नहीं आई। आई सिर्फ़ मां। और मां एवं रिश्तेदारों ने उनहें इस बात के लिए मना लिया कि वे भविष्य में लैला से किसी तरह का संबंध नहीं रखेंगे। अब परिवार में भी उन्हें जगह मिल गई, पार्टी में जगह मिलने के बारे में हुड्डा ने कहा कि इस संबंध में आलाकमान से बातें करेंगे। पिता ने पुत्र को समझाया, 'आगे से ऐसे चक्करों में मत पड़ना।' जहां तक सवाल मद्यपान का है तो लंदन में कराये इलाज से भी कुछ फायदा नहीं हुआ। अब पीते हैं, मगर थोड़ी-थोड़ी। मुंह एकदम सिल रखा है। कहते हैं कि अपने अनुज की पार्टी में शामिल होने जा रहे हैं। पर इस पार्टी ने विधानसभा चुनाव में कोई धमाल नहीं मचाया। अनुज कहते हैं कि भाई साहब ने पार्टी का सदस्य बनने के लिए फार्म नहीं भरा है। जब फार्म भरेंगे तो निर्णय लिया जायेगा कि उन्हें पार्टी में लिया जाये या नहीं। वैसे भाई साहब राजनीतिक रूप से विशेष सक्रिय नहीं हैं। जब राज्य के उप मुख्यमंत्री थे तब भी कहने भर के लिए ही थे। कहा जाता है कि उनकी यह दुर्गति शराब ने की है। यह भेद तो पहले ही खुला था कि उप मुख्यमंत्री महोदय शराबी हैं, पर कोई मुंह पर नहीं कह सकता था। पर उन्होंने जब स्वयं ही कह दिया था कि शराबखोरी का इलाज कराने लंदन गया था तो कोई क्या करे। बहरहाल, माता-पिता उनसे प्रसन्न हैं। बीवी और बाल-बच्चे भी। एक दुखी है तो लैला जिसका 'सब कुछ' लुट गया।

दो पाटन के बीच में...

समाजवादी थे और अभी भी हैं। एक समय था कि रेलवे में ऐसी हड़ताल करवाई थी कि सरकार भी हिलने लगी थी। फ़िर डायनामाइट कांड को लेकर चर्चित हुए। इस कांड से यह सिद्ध हो गया कि वे कितने बड़े वीर हैं। पर किसी पार्टी में जगह नहीं बना सके। कहते हैं कि ऐसे वीर पुरुष के लायक कोई पार्टी ही नहीं थी। कांग्रेस का एकछत्र राज था। फ़िर बुढ़ापे में सत्तामोह ने ऐसा असर दिखाया कि सांप्रदायिकता जिसकी आलोचना करते हुए वे नहीं थकते थे, उसी की प्रतिनिधि पार्टी के गठबंधन के संयोजक बन गये और अभी भी बने हुए हैं। पिछले दिनों बुढ़ापे की बीमारी का इलाज तिब्बती पद्धति से कराने के लिए धर्मशाला चले गये। पर राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं ने कुछ ऐसा जोर मारा कि इलाज बीच में ही छोड़ कर कर्मक्षेत्र में आ गये। कहते हैं कि जब ये अधेड़ावस्था में थे तभी इनकी अपनी धर्मपत्नी लैला कबीर और बेटे से खटपट हो गई थी। इसके बाद दोनों में अनौपचारिक अलगाव हो गया था। इस अलगाव के बाद इनके अनौपचारिक संबंध एक वरिष्ठ नौकरशाह की पत्नी जया जेटली से बने। संभवत: पत्नी का रोल वही निभाने लगी। लेकिन ईमानदारी इनके खून में रची-बसी थी। यहां तक कि वे अपनी सरकारी गाड़ी का इस्तेमाल अपने बेटे तक को करने नहीं देते थे। अपने कपड़े खुद धोते इन्हें टीवी पर दिखाया गया था। ये कपड़े भी बिना प्रेस किये ही पहनते थे। स्वावलंबन का उन्होंने उदाहरण पेश किया था। राजग का संयोजक होने के साथ ये जनता दल (यू) के प्रमुख नेताओं में थे। पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से इनकी कुछ खटपट हो गई और युवा नेताओं ने इन्हें किनारे कर दिया। पर ये खुद किनारे नहीं हुए। पार्टी में डंके की चोट पर बने रहे। कहते हैं कि जब ये रक्षा मंत्री थे तो उस समय हथियारों की ख़रीद को लेकर कोई बड़ा घोटाला हुआ था और इलेक्ट्रानिक मिडिया के प्रमुख पत्रकार ने स्टिंग ऑपरेशन किया था, जिसमें जया जेटली पैसे लेने को तैयार हो गई थीं। इससे इनके दामन पर भी दाग लगा, पर स्टिंग ऑपरेशन में ये डाइरेक्ट नहीं फंसे। राजनीतिक मोर्चे पर ये बराबर ऊपर ही रहे। पर घरेलू मोर्चे पर प्रारंभ से ही परेशान रहे। वो तो जया जेटली ने इन्हें सहारा दिया। पर कहते हैं कि अब संपत्ति विवाद को लेकर इनकी धर्मपत्नी और जया जेटली में तकरार शुरू हो गई है। इनकी धर्मपत्नी ने बराबर इनके पास आना-जाना शुरू कर दिया है। मामला बंगलूरू कि एक प्लौट का है जिसे बरसों पूर्व इन्होंने ख़रीदा था। फ़िर हाल ही में इसे बेच डाला जिससे 22 करोड़ रुपये मिले। इन्हीं 22 करोड़ रुपयों के लिए लैला कबीर और जया जेटली में तनातनी है जिसके शिकार ये भी हो रहे हैं। इन्हें पैसे से क्या लेना-देना? पर दोनों औरतों से तो लेना-देना है। आखिर एक इनकी धर्मपत्नी हैं तो एक इनकी चिर प्रेमिका। कहते हैं कि जया जेटली ने 22 करोड़ रुपयों में कुछ खर्च कर डाले हैं। इसी पर विवाद है। जया ने करोड़ों रुपयों पर कब्ज़ा कर लिया है और लैला कबीर उस धन पर अपना कब्ज़ा चाहती हैं। इधर साहब जिनका पैसा है, दो पाटन के बीच में फंसे हैं।

बिग बी मोदी खेमे में!

क्या बिग बी गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के खेमे में चले गये हैं। कहा जा रहा है कि बिग बी ने मोदी से मुलाकात की और अपनी बहुचर्चित फिल्म 'पा' को टैक्स-फ्री करने का अनुरोध किया। मोदी ने बिग बी के अनुरोध को स्वीकार करते हुए 'पा' को टैक्स-फ्री कर दिया। 'पा' में अमिताभ बच्चन ने प्रिजोरिया नाम की बीमारी से ग्रस्त बच्चे का अभिनय किया है और दिलचस्प बात यह है कि उनके पिता का रोल उनके बेटे अभिषेक बच्चन ने निभाया है। प्रिजोरिया एक ऐसी बीमारी है जो लाखों में एक को होती है और इस बीमारी से ग्रस्त बच्चे में सारे लक्षण बुढ़ापे के आने लगते हैं। इस फ़िल्म को जिन लोगों ने देखा है, वे इसे एक अति संवेदनशील फ़िल्म मानते हैं। दूसरी बात यह है कि 60 से अधिक के हो चुके अमिताभ ने आधुनिक मेकअप तकनीक का सहारा ले कर एक असामान्य बच्चे का रोल निभाया, वहीं उनके बेटे ने उनके पिता का। इसे देखते हुए इस फ़िल्म में दर्शकों की रुचि बढ़ गई है। अमिताभ एक कुशल और मंजे हुए अभिनेता हैं, इसमें संदेह नहीं। पर वे मोदी के खेमे में कैसे चले गये, यह आश्चर्य की बात है। अभी तक तो वे भाया अमर सिंह मुलायम के खेमे में थे। उन्होंने समाजवादी पार्टी के लिए प्रचार भी किया था। मुलायम को वे अपना बड़ा भाई घोषित किया था। पर जब मोदी के लिए 'पा' फ़िल्म का स्पेशल शो आयोजित हुआ तो अमिताभ बच्चन भी वहां पहुंचे और उन्होंने मोदी के साथ बैठ कर फ़िल्म देखी। इसके बाद उन्होंने मोदी से फ़िल्म को टैक्स-फ्री करने का आग्रह किया। क्या इससे यह समझा जाये कि अमिताभ उर्फ़ बिग बी अब राजनीति में भगवा रंग से प्रभावित होने लगे हैं? नहीं तो गुजरात जाना और वहां मोदी से फ़िल्म को टैक्स-फ्री करने के आग्रह का क्या मतलब हो सकता है? आखिर, ऐसे भी राज्य हैं जहां कांग्रेस तथा अन्य दलों अथवा गठबंधनों की सरकार है, वहां वे क्यों नहीं गये?

अमिताभ को राजनीति में लाने का काम उनके बाल सखा राजीव गांधी ने किया था और वे इलाहाबाद से हेमवतीनंदन बहुगुणा जैसे माहिर राजनीतिज्ञ को हरा कर संसद में आये थे। पर जब बोफोर्स घोटाला उजागर हुआ और इसके कुछ छींटे उन पर भी पड़े तो उनहोंने राजनीति से तौबा कर लेना ही बेहतर समझा। राजीव गांधी की हत्या के बाद गांधी-नेहरू परिवार से उनके रिश्ते भी पहले जैसे नहीं रहे। फ़िर फ़िल्मी दुनिया में पैठ रखने वाले अमर सिंह ने उन्हें मुलायम के करीब लाया और अमिताभ यद्यपि सक्रिय राजनीति में नहीं आये, लेकिन बतौर सुपर स्टार उन्होंने मुलायम का साथ दिया और मुलायम ने उनका। पर उनकी नजदीकियां अगर मोदी से बढ़ती हैं तो मुलायम इसे पचा नहीं पायेंगे, क्योंकि उनकी राजनीतिक लाइन सर्वथा अलग है। वैसे, अमिताभ का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है, पर उनका मोदी से मिलना अपने आप में मुलायम के लिए संशय पैदा करने वाला होगा। बहरहाल, छोटे अंबानी के भी मुलायम से गहरे संबंध हैं, पर वे भी सुनील मित्तल के साथ मोदी से मिलने यह कहने गये थे कि प्रधानमंत्री पद के लिए मोदी सबसे सुयोग्य पात्र हैं।

अब क्या होगा?

पार्टी में फ़िल्मी परदे पर नाचने-गाने वालों को लाने वाले महासचिव जिन्हें राजनीति की दुनिया में 'दलाल' की उपाधि मिली हुई है, जब पार्टी के सभी पदों से इस्तीफ़ा दे दिया तो 'नाचने-गाने' वालों में भी इसकी प्रतिक्रिया होना लाज़िमी था। पहली प्रतिक्रिया आई 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' कीजिन्हें पार्टी में दाखिला मिलते ही महासचिव का पद दे दिया गया पर अदालत की वक्र दृष्टि के कारण लाख चाहते हुए भी लोकसभा चुनाव का टिकट नहीं मिला। फ़िर भी बतौर स्टार प्रचारक चुनाव प्रचार के दौरान इन्होंने तमाम फ़िल्मी लटके-झटके दिखाये। प्रचार के दौरान ही एक बार इन्होंने हाथी-सवार राज्य की मुख्यमंत्री की 'पप्पी-झप्पी' लेने की बात कही तो एक बड़ा हंगामा होते-होते बचा, क्योंकि मुन्ना भाई ने तुरंत हाथ जोड़ कर माफ़ी मांग ली। अब ये जनाब फ़रमाते हैं कि उन्हें पार्टी में लाने वाले ही ने सभी पदों से इस्तीफ़ा दे दिया तो वे पार्टी में किसी पद पर क्यों कर रहें। बहरहाल, उन्होंने भी महासचिव पद से इस्तीफ़ा दे दिया। इनका फ़िल्मी कैरियर अभी चालू हालत में है, इसलिए बेफ़िक्र हैं। वैसे ये शिवसेना में भी जा सकते हैं। नाजायज हथियार रखने वाले आतंकी मुकदमों में फंसे थे तब बाला साहब ने इनकी काफ़ी मदद की थी। पर अभी ये अमर सिंह की पूंछ पकड़े डोल रहे हैं। इस बार चुनाव प्रचार के दौरान खूब नाचने और डायलॉगबाजी करने के बावजूद पार्टी सुप्रीमो की नज़रों में भी कोई खास हैसियत नहीं। वैसे अब देखना है कि बुढ़ा चुकी अभिनेत्रियों की क्या प्रतिक्रिया होती है जिनमें से एक राज्य सभा में हैं और साथ में उनके पति की जिनके लाडले का विवाह नहीं हो पा रहा था, पर 'राजनीति के दलाल' महोदय की कृपा से 'विश्व सुंदरी' से हुआ जिसे छोटे अंबानी ने अपनी अंकशायिनी बना रखा था और दलाल के काफ़ी कहने पर उसे छोड़ने को राजी हुआ। 'विश्व सुंदरी' महोदया भी 'सत्तर चूहे' खा चुकी हैं और जिनकी नंगी तस्वीरें नेट पर थोक में उपलब्ध हैं।

हंसते रहे

वे हंसते रहते हैं। बराबर से हंसते रहे। घर में बचपन से ही हंसते रहे। जब किसी को छेड़ा तो भी हंसते रहे और किसी का बलात्कार किया तो भी हंसते रहे। पुलिस अफ़सर बनने पर तो खूब हंसे और झूठे मुक़दमे बनाकर और भी ज़्यादा हंसे।

पर भूल गए कि हंसने वाले को रोना भी पड़ता है। अपनी बेटी की उम्र की रुचिका को छेड़ा तब तो खूब हंसे और इस मामले में विभग से बख़्श दिए गए तो हंसने का कोई पारावार नहीं था। पर जब तथाकथित मीडिया ट्रायल शुरू हुआ तो बच्चू फंस गए और लगे भीतर ही भीतर रोने।

पर प्रैस वालों से मिलने पर, पुलिस तफ़्तीश के दौरान और अदालत में हंसते-हंसते ही रहे। पत्रकारों को इन्होंने एक 'राज़' की बात बताई कि किसी भी परिस्थिति में हंसना इन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू से सीखा था।

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- भारत सरकार की विशेषज्ञ समिति ने नई प्रवृत्ति के घातक बैंगन बीज को स्वीकृति दे कर जीएम बीज कंपनियों के लिए राहें खोल दी हैं। लेकिन व्यापक चिंता-विरोध को देखते हुए सरकार ने इस पर राय-एतराज मांगा है।

- अति घातक परमांणु बिजली घरों के लिये आतुर भारत सरकार यूरेनियम के लिए हाथ-पैर मार रही है। इस संदर्भ में लोगों के भारी विरोध के बावजूद मेघालय में यूरेनियम के खनन की तैयारी की अनुमति राज्य सरकार ने दे दी है। यूरेनियम और इसके कचरे के वर्तमान और भविष्य में घातक प्रभावों को जानते खासी छात्रों ने इसका व्यापक विरोध शुरू कर दिया है।

- गुजरात के भाव नगर जिले में परमाणु बिजली घर बनाने का विरोध शुरू हो गया है। गांवों के लोगों ने बेदखली, हवा-पानी, मिट्टी जहरीली कर दिये जाने, एटम बमों के फटने जैसे खतरों के दृष्टिगत परमाणु बिजली घर लगाने का विरोध शुरू कर दिया है।

- हरियाणा सरकार फतेहाबाद जिले में परमाणु बिजली घर लगाने की स्वीकृति को बड़ी सफलता के रूप में प्रचारित कर रही है, जबकि चार गांवों के लोगों ने पता चलते ही परमाणु बिजली घर का विरोध शुरू कर दिया है।

- फरीदाबाद, ओखला तथा गुड़गांव में फ़ैक्ट्रियों में काम करते 70-75 प्रतिशत मज़दूर अदृश्य हैं। कारखानों में काम कर रहे तीन-चौथाई मज़दूर कंपनियों तथा सरकारी दस्तावेज़ों के अनुसार फ़ैक्ट्रियों में होते ही नहीं हैं। 'ईएसआई नहीं' का अर्थ यही है। अस्सी-पचासी प्रतिशत फ़ैक्ट्री मज़दूरों को दिल्ली व हरियाणा सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिया जाता। फ़ैक्ट्रियों में मज़दूरों द्वारा 12 घंटे प्रतिदिन काम करना सामान्य बात है। और 98-99 प्रतिशत ओवरटाइम दिखाया ही नहीं जाता है तथा भुगतान दुगनी दर के बजाय सिंगल दर से किया जाता है।

फरीदाबाद मजदूर समाचार, नवंबर 2009 से

तथाकथित कृषि क्रांति

इधर प्रगति-विकास के लिए कृषि क्षेत्र में दूसरी क्रांति की घोषणायें हो रही हैं। अनुसंधान जारी है, वैज्ञानिक जुटे हैं। इस समय जोर नये बीजों पर है। टमाटर के बीज में मछली के बीज का चुनिंदा जीन, आलू के बीज में मेढक के बीज का चुनिंदा अंश, चावल के बीज में सूअर के बीज का चुनिंदा जीन आदि।

इसे अंग्रेजी में जेनिटकली मोडिफाई करना कहते हैं और ऐसे बीजों को जीएम बीज। अमेरिका में बीस वर्षों से जीएम बीजों से मक्का, सोयाबीन आदि की फसलें ली जा रही हैं। अधिक उपज वाली ये फसलें मुख्यत: मुर्गी, सूअर, गाय की खुराक बनती हैं। इनका उपयोग मांस बढ़ाने के लिए किया जाता है। अमेरिका में जब से इन बीजों का प्रयोग शुरू किया गया, वहां एलर्जी, कैंसर आदि बीमारियों में भारी वृद्धि हुई है। यूरोप में जीएम उपज पर रोक लगा दी गई है। भारत में जीएम कपास के बाद अब जीएम बैंगन दस्तक दे रहा है और जीएम भिंडी, जीएम बंदगोभी, जीएम फूलगोभी, जीएम ज्वार, जीएम मूंगफली, जीएम सरसों लाइन में हैं। कृषि में यह दूसरी क्रांति महामारी प्लेग की आमंत्रण है।